Vol.05 Issue-8 (August, 2017) ISSN: 2321-1784
International Journal in Management and Social Science (Impact Factor- 6.178)

भारत की आजादी में प्रमुख क्रांतिकारी आंदोलनों की भूमिका : चौरा चौरी और काकोरी ट्रेन एक्शन के विशेष संदर्भ में

डॉ वंदना शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर (इतिहास)
राजकीय स्नातकोतर महाविद्यालय, फतेहाबाद, आगरा

सार

भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्ति दिलाने में कई कारकों का योगदान रहा है, जिनमें से क्रांतिकारी आंदोलन एक महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक अध्याय है। इन आंदोलनों ने न केवल जनता में देशभक्ति की भावना जगाई, बल्कि ब्रिटिश साम्राज्य की नींव को हिलाकर रख दिया। गांधीवादी अहिंसक आंदोलन के समानांतर, क्रांतिकारी धाराओं ने अपनी अनूठी रणनीति और बलिदान से स्वतंत्रता संग्राम को एक अलग आयाम दिया। क्रांतिकारी आंदोलनों का उदय 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में हुआ, जब कांग्रेस की उदारवादी नीतियों से युवाओं का मोहभंग होने लगा था। उनका मानना था कि ब्रिटिश सत्ता केवल बल प्रयोग से ही भारत छोड़ेगी। इन आंदोलनों ने विभिन्न रूपों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, जिनमें व्यक्तिगत वीरता के कार्य, गुप्त संगठन, बम हमले और सशस्त्र विद्रोह शामिल थे। बंगाल, पंजाब, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश जैसे क्षेत्र क्रांतिकारी गतिविधियों के प्रमुख केंद्र थे। बंगाल में अनुशीलन समिति और युगांतर जैसे संगठनों ने अपनी शाखाएं स्थापित कीं। खुदीराम बोस, प्रफुल्ल चाकी, अरविंद घोष और जतिंदर नाथ मुखर्जी (बाघा जतिन) जैसे क्रांतिकारियों ने ब्रिटिश अधिकारियों पर हमले किए और जनता में भय के बजाय साहस का संचार किया। अलीपुर बम केस और हावड़ा षड्यंत्र केस जैसी घटनाओं ने ब्रिटिश सरकार को चौकन्ना कर दिया।

मुख्य शब्द

ब्रिटिश, शासन,क्रांतिकारी, आंदोलन, चौरा चौरी, काकोरी

भूमिका

गांधीजी का भारत में पहला महत्वपूर्ण आंदोलन 1917 का चंपारण सत्याग्रह था। बिहार के चंपारण जिले के किसानों को अंग्रेजों द्वारा नील की खेती करने के लिए मजबूर किया जा रहा था और उन्हें इसके लिए उचित भुगतान भी नहीं मिलता था। गांधीजी ने अहिंसक विरोध प्रदर्शनों और बातचीत के माध्यम से किसानों को न्याय दिलाया, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि अहिंसा भी एक शक्तिशाली हथियार हो सकता है।

महात्मा गांधी के आंदोलनों की सबसे बड़ी विशेषता उनकी अहिंसक प्रकृति थी। उन्होंने दर्शाया कि बिना किसी हिंसा के भी बड़े से बड़े साम्राज्य को झुकाया जा सकता है। उनके सत्याग्रह ने लोगों को अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने के लिए प्रेरित किया और उन्हें अपने अधिकारों के लिए लड़ने का साहस दिया। गांधीजी ने न केवल

राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया, बल्कि सामाजिक सुधारों, अस्पृश्यता उन्मूलन और ग्रामीण आत्मनिर्भरता पर भी जोर दिया, जिससे एक मजबूत और स्वतंत्र भारत की नींव रखी जा सके।

महात्मा गांधी के आंदोलनों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में केंद्रीय भूमिका निभाई। उनके नेतृत्व में भारत ने अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए विश्व को एक नया दर्शन दिया। उनके आंदोलनों ने भारतीयों को एकजुट किया, उनमें राष्ट्रीय चेतना जगाई और अंततः ब्रिटिश शासन को भारत छोड़ने पर मजबूर किया। गांधीजी के आंदोलन केवल स्वतंत्रता प्राप्त करने का साधन नहीं थे, बल्कि वे एक ऐसे समाज की स्थापना का मार्ग भी थे जहाँ न्याय, समानता और मानवीय गरिमा का सम्मान हो। इसके बाद, 1918 में उन्होंने गुजरात के खेड़ा सत्याग्रह का नेतृत्व किया, जहाँ फसल खराब होने के बावजूद ब्रिटिश सरकार किसानों से कर वसूल रही थी। गांधीजी के हस्तक्षेप से किसानों को कर माफी मिली, जिससे उनकी नेतृत्व क्षमता और मजबूत हुई। इसी वर्ष, अहमदाबाद के मिल मजदूरों के लिए भी उन्होंने भूख हड़ताल का सफलतापूर्वक उपयोग किया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एक लंबी और जटिल यात्रा थी, जिसमें विभिन्न विचारधाराओं और रणनीतियों का संगम देखने को मिला। जहां एक ओर महात्मा गांधी के नेतृत्व में अहिंसक असहयोग आंदोलन अपने चरम पर था, वहीं दूसरी ओर क्रांतिकारी गतिविधियां भी देश के कोने-कोने में सुलग रही थीं। इसी पृष्ठभूमि में, 4 फरवरी 1922 को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले में हुई "चौरी चौरा" की घटना ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की दिशा और दशा को काफी हद तक प्रभावित किया। हालांकि यह घटना अपने आप में छोटी थी, लेकिन इसके दूरगामी परिणाम हुए, जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारत के बाहर भी, क्रांतिकारी आंदोलन सक्रिय रहे। गदर पार्टी, जिसका गठन उत्तरी अमेरिका में हुआ था, ने प्रवासी भारतीयों को संगठित किया और ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह की योजना बनाई। रास बिहारी बोस और लाला हरदयाल जैसे नेताओं ने विदेशों से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को समर्थन दिया। सुभाष चंद्र बोस द्वारा गठित आज़ाद हिंद फौज ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश सेना के खिलाफ लड़ाई लड़ी और "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा" जैसे नारे से लाखों भारतीयों को प्रेरित किया।

महाराष्ट्र में, वासुदेव बलवंत फड़के ने ब्रिटिश राज के खिलाफ शुरुआती विद्रोहों में से एक का नेतृत्व किया। चापेकर बंधुओं (दामोदर और बालकृष्ण) ने पुणे में प्लेग कमिश्नर रैंड की हत्या कर ब्रिटिश सरकार को चुनौती दी। विनायक दामोदर सावरकर द्वारा स्थापित अभिनव भारत सोसायटी ने क्रांतिकारी विचारों को फैलाने और युवाओं को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पंजाब में, लाला लाजपत राय, भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु जैसे नेता क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय थे। हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (बाद में हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन) ने उत्तर भारत में क्रांतिकारी आंदोलन को एक नई दिशा दी। भगत सिंह और उनके साथियों ने असेंबली में बम फेंककर और 'इंकलाब जिंदाबाद' का नारा बुलंद कर ब्रिटिश सरकार की दमनकारी

नीतियों का विरोध किया। उनका बलिदान युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बन गया।

साहित्य की समीक्षा

गांधीजी के आंदोलनों में सबसे महत्वपूर्ण था असहयोग आंदोलन (1920-22)। जलियांवाला बाग हत्याकांड और रॉलेट एक्ट के विरोध में शुरू किए गए इस आंदोलन में गांधीजी ने भारतीयों से ब्रिटिश वस्तुओं, शिक्षण संस्थानों, अदालतों और सरकारी सेवाओं का बहिष्कार करने का आह्वान किया। इस आंदोलन ने ब्रिटिश शासन की नींव हिला दी और देश भर में एक अभूतपूर्व राष्ट्रव्यापी जागरण पैदा किया। हालाँकि चौरी-चौरा की घटना के बाद इसे स्थगित कर दिया गया, लेकिन इसने स्वतंत्रता संग्राम को एक नई गति दी। [1]

1930 में गांधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत की, जिसकी शुरुआत प्रसिद्ध दांडी मार्च से हुई। नमक पर ब्रिटिश सरकार के एकाधिकार को तोड़ने के लिए गांधीजी ने दांडी तक पैदल यात्रा की और नमक कानून तोड़ा। इस आंदोलन ने देश के कोने-कोने में लोगों को ब्रिटिश कानूनों का उल्लंघन करने के लिए प्रेरित किया। इस आंदोलन ने भारत की जनता में आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान की भावना भरी और ब्रिटिश सरकार को भारतीय मांगों पर विचार करने के लिए मजबूर किया। [2]

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीयों की इच्छा के विरुद्ध उन्हें युद्ध में शामिल करने के विरोध में गांधीजी ने भारत छोड़ो आंदोलन (1942) का बिगुल फूंका। उन्होंने 'करो या मरो' का नारा दिया, जिसने भारतीय जनता में अभूतपूर्व उत्साह भर दिया। [3]

भारत छोड़ो आंदोलन ने ब्रिटिश सरकार पर इतना दबाव डाला कि उन्हें यह एहसास हो गया कि अब भारत पर राज करना संभव नहीं है। भले ही इस आंदोलन के दौरान गांधीजी सहित कई नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया, लेकिन इसने स्वतंत्रता की दिशा में अंतिम और निर्णायक धक्का दिया। [4]

भारत की आजादी में प्रमुख क्रांतिकारी आंदोलनों की भूमिका : चौरा चौरी और काकोरी ट्रेन एक्शन के विशेष संदर्भ में

चौरी चौरा की घटना दरअसल असहयोग आंदोलन का ही एक परिणाम थी। महात्मा गांधी ने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ अहिंसक असहयोग का आह्वान किया था, और देश भर में लोग इस आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे थे। ग्रामीण क्षेत्रों में भी जमींदारों और पुलिस के अत्याचारों से पीड़ित किसान आंदोलन से जुड़ रहे थे। चौरी चौरा में भी ऐसा ही कुछ हुआ। पुलिस द्वारा शांतिपूर्ण जुलूस को रोकने और प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाने के बाद, गुस्साई भीड़ ने एक पुलिस थाने में आग लगा दी, जिसमें 22 पुलिसकर्मी मारे गए। यह घटना महात्मा गांधी के अहिंसक दर्शन के विपरीत थी, और इसने उन्हें गहरे सदमे में डाल दिया।

इस घटना के तत्काल बाद महात्मा गांधी ने 12 फरवरी 1922 को राष्ट्रीय स्तर पर असहयोग आंदोलन को स्थगित कर दिया। यह निर्णय कई लोगों के लिए अप्रत्याशित और निराशाजनक था, क्योंकि आंदोलन उस समय अपने पूरे

चरम पर था। बहुत से नेताओं और क्रांतिकारियों ने गांधीजी के इस फैसले का विरोध किया, क्योंकि उनका मानना था कि हिंसा की एक छोटी घटना के लिए पूरे आंदोलन को रोकना उचित नहीं था। हालांकि, गांधीजी का मानना था कि यदि आंदोलन में हिंसा का प्रवेश हो गया, तो वह अपने मूल उद्देश्य से भटक जाएगा और अराजकता फैल जाएगी।

चौरी चौरा की घटना के तात्कालिक परिणाम के रूप में असहयोग आंदोलन समाप्त हो गया, जिसने स्वतंत्रता संग्राम की गति को कुछ समय के लिए धीमा कर दिया। लेकिन इसके दीर्घकालिक प्रभाव भी थे। इस घटना ने एक तरह से यह स्पष्ट कर दिया कि भारतीय जनता, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों की जनता, ब्रिटिश शासन के अत्याचारों के प्रति कितनी असंतोष थी और उनमें प्रतिकार की भावना कितनी प्रबल थी। भले ही गांधीजी ने अहिंसा का मार्ग चुना था, लेकिन चौरी चौरा जैसी घटनाओं ने दिखाया कि जनता में आक्रोश इतना गहरा था कि वह किसी भी क्षण हिंसक रूप ले सकता था।

यह घटना उन क्रांतिकारियों के लिए भी एक मोड़ साबित हुई जो अहिंसा के मार्ग से असहमत थे। उन्हें लगा कि गांधीजी का तरीका भारत को तुरंत आजादी दिलाने में सक्षम नहीं है, और इसलिए उन्होंने अपने हिंसक क्रांतिकारी तरीकों को और तेज कर दिया। भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल जैसे कई युवा नेताओं ने चौरी चौरा के बाद अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों को बढ़ावा दिया, और ब्रिटिश साम्राज्य को चुनौती देने के लिए विभिन्न साधनों का उपयोग किया।

इसके अलावा, चौरी चौरा ने ब्रिटिश सरकार को भी यह संदेश दिया कि भारतीय जनता अब दमन को चुपचाप सहन करने को तैयार नहीं थी। भले ही उन्होंने आंदोलन को दबाने के लिए कठोर कदम उठाए, लेकिन उन्हें यह एहसास हो गया कि उन्हें अब और अधिक सतर्क रहना होगा।

संक्षेप में, चौरी चौरा आंदोलन ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक निर्णायक भूमिका निभाई। इसने न केवल महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन की दिशा बदली, बल्कि इसने क्रांतिकारी राष्ट्रवाद को भी एक नई ऊर्जा दी। भले ही यह एक हिंसक घटना थी, लेकिन इसने भारतीय जनता के भीतर व्याप्त असंतोष और आजादी की प्रबल इच्छा को उजागर किया। यह एक ऐसा क्षण था जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न आयामों को सामने लाया और भविष्य के आंदोलनों के लिए एक महत्वपूर्ण सबक प्रदान किया। चौरी चौरा भले ही असहयोग आंदोलन के अंत का कारण बना, लेकिन यह स्वतंत्रता की आग को और भड़काने में सहायक सिद्ध हुआ, और अंततः भारत की आजादी के मार्ग में एक महत्वपूर्ण पड़ाव बना।

भारत की स्वतंत्रता संग्राम में काकोरी ट्रेन एक्शन (जिसे पहले काकोरी कांड के नाम से जाना जाता था) एक महत्वपूर्ण घटना थी, जिसने भारतीय क्रांतिकारियों के साहस और संकल्प को प्रदर्शित किया। 9 अगस्त, 1925 को लखनऊ के पास काकोरी नामक स्थान पर हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) के सदस्यों द्वारा की गई इस

कार्रवाई ने ब्रिटिश साम्राज्य को हिला दिया और स्वतंत्रता आंदोलन को एक नई दिशा दी।

काकोरी ट्रेन एक्शन का मुख्य उद्देश्य क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए धन जुटाना था। महात्मा गांधी द्वारा असहयोग आंदोलन वापस लेने के बाद, कई युवा राष्ट्रवादियों ने हिंसक साधनों को अपनाना शुरू कर दिया था ताकि ब्रिटिश साम्राज्यवाद को कमजोर किया जा सके। HRA को अपने अभियानों को अंजाम देने के लिए हथियारों और अन्य संसाधनों की आवश्यकता थी, और उन्होंने ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीय जनता से भारी करों के माध्यम से एकत्र किए गए धन को लूटने का निर्णय लिया।

इस एक्शन को राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खान, राजेंद्र लाहिड़ी, चंद्रशेखर आजाद और रोशन सिंह जैसे बहादुर क्रांतिकारियों ने अंजाम दिया था। उन्होंने सहारनपुर से लखनऊ आ रही "आठ डाउन सहारनपुर-लखनऊ पैसेंजर ट्रेन" को काकोरी स्टेशन पर रोका और गार्ड के डिब्बे से सरकारी खजाने को लूट लिया। यह एक सुनियोजित और समन्वित ऑपरेशन था जिसने ब्रिटिश शासन को यह संदेश दिया कि भारतीय क्रांतिकारी संगठित और दृढ़ हैं।

इस घटना ने क्रांतिकारी आंदोलन को एक नई दिशा और ऊर्जा दी। इसने युवाओं में आजादी के प्रति जोश बढ़ाया और उन्हें ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। काकोरी एक्शन के बाद, ब्रिटिश सरकार ने बड़े पैमाने पर कार्रवाई की, जिसके परिणामस्वरूप कई HRA सदस्यों को गिरफ्तार किया गया। राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खान, राजेंद्र लाहिड़ी और रोशन सिंह को फाँसी दे दी गई, जबकि कई अन्य को लंबी जेल की सजा सुनाई गई। इन क्रांतिकारियों की शहादत ने उन्हें राष्ट्रीय नायक बना दिया और भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद जैसे भविष्य के क्रांतिकारियों को प्रेरित किया।

काकोरी घटना ने HRA को अपनी विचारधारा और रणनीति को परिष्कृत करने की आवश्यकता का एहसास कराया। इसने भविष्य के क्रांतिकारी समूहों के लिए एक वैचारिक ढाँचा तैयार करने में योगदान दिया। इस घटना ने ब्रिटिश सरकार की सत्ता को सीधी चुनौती दी। इसने ब्रिटिश शासन को यह स्पष्ट कर दिया कि भारतीय क्रांतिकारी चुपचाप नहीं बैठेंगे और वे अपनी आजादी के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं। काकोरी एक्शन ने राष्ट्रीय स्तर पर पहचान हासिल की और जनता का ध्यान आकर्षित किया। इसने भारतीय जनता में स्वतंत्रता की भावना को जगाया और उपनिवेशवाद के खिलाफ प्रतिरोध का प्रतीक बन गया।

निष्कर्ष

काकोरी ट्रेन एक्शन केवल एक धन जुटाने की घटना नहीं थी, बल्कि यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण मोड़ था। इसने भारतीय क्रांतिकारियों के अदम्य साहस, देशभक्ति और बलिदान की भावना को दर्शाया। इस एक्शन ने न केवल ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिलाई, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वतंत्रता के लिए लड़ने की प्रेरणा भी प्रदान की, जिसने अंततः भारत को अपनी आजादी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हालांकि

क्रांतिकारी आंदोलन बड़े पैमाने पर ब्रिटिश सेना को सीधे हराने में सफल नहीं हो सके, लेकिन उनकी भूमिका को कम करके नहीं आंका जा सकता। उन्होंने ब्रिटिश सरकार पर दबाव बनाया, जिससे उन्हें सुधारों पर विचार करने और अंततः भारत छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। इन आंदोलनों ने जनता में राष्ट्रवाद की भावना को मजबूत किया, युवाओं को बलिदान के लिए प्रेरित किया और स्वतंत्रता संग्राम को एक उग्र और अडिग चरित्र प्रदान किया। क्रांतिकारियों के बलिदान और साहस ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक अमिट छाप छोड़ी है, और उनकी गाथाएँ आज भी हमें प्रेरणा देती हैं।

संदर्भ

बंगाल में क्रांति के संस्मरण, डोम. लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस, वाशिंगटन, डी.सी. 20540 यू.एस.ए. अभिगमन तिथि 2015.

भट्टाचेरजे, एस.बी. (2015). भारतीय घटनाओं और तिथियों का विश्वकोश स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-207-4074-7.

घोष, जामिनी मोहन (2015). बंगाल में संन्यासी और फकीर हमलावर; मुख्य रूप से आधिकारिक अभिलेखों से संकलित. बंगाल सचिवालय बुक डिपो.

चटर्जी, गौरीपाड़ा (2014). मिदनापुर, भारत के स्वतंत्रता संग्राम का अग्रदूत मित्तल प्रकाशन. वेल्लोर में विद्रोह का लेखा-जोखा, सर जॉन फैनकोर्ट की महिला द्वारा, कमांडेंट, जो वहाँ मारे गए थे.

ओरांस, मार्टिन। "भूमिज विद्रोह: (गंगा नारायण का हंगामा या उथल-पुथल)। जगदीश चंद्र झा द्वारा। दिल्ली: मुंशीराम मनोहरलाल, xii, 208 पृष्ठ। मानचित्र, शब्दावली, ग्रंथ सूची, सूचकांक,
इरेटा"। द जर्नल ऑफ़ एशियन स्टडीज़ 28 (3): 630–631.2014 आई.एस.एस.एन. 1752-0401

श्रीकृष्ण 'सरला' (2014) भारतीय क्रांतिकारी (खंड-1): एक व्यापक अध्ययन: एक व्यापक अध्ययन)। प्रभात प्रकाशन. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-87100-16-4.

गॉट, रिचर्ड (2015) ब्रिटेन का साम्राज्य: प्रतिरोध, दमन और विद्रोह। वर्सो बुक्स। आईएसबीन 978-1-83976-422-6

ज़ालक्सो, आभा (2015) " विद्रोह (एचयूएल)। भारतीय इतिहास की कार्यवाही। 69: 732–755